अग्निहोत्र (हवन) विधि

(दैनिक एवं सप्ताहिक)

ओ३म्
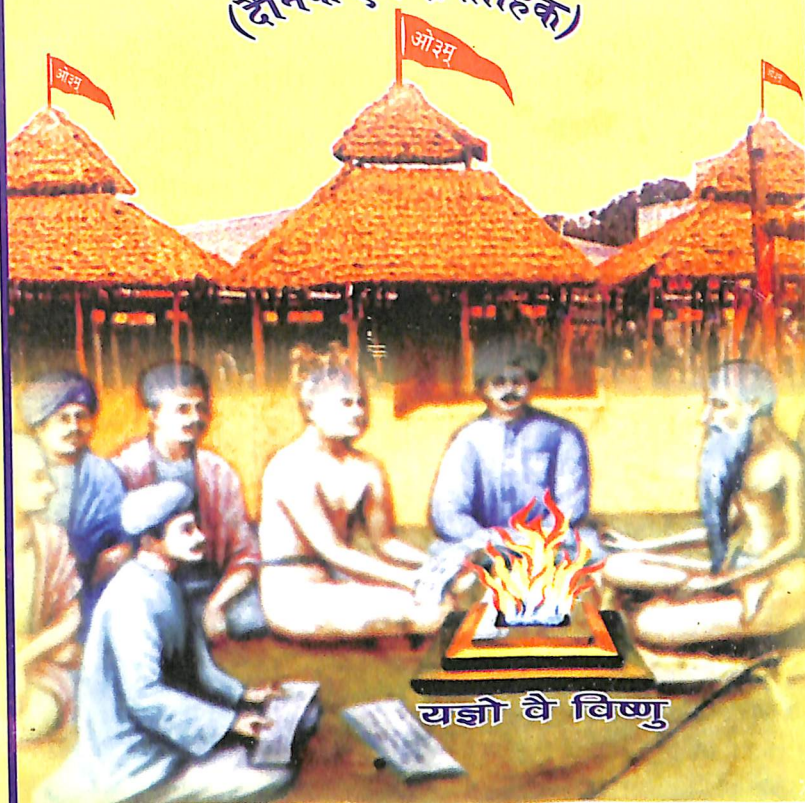
यज्ञो वै विष्णु

स्वर्गकामो यजेत

स्वर्ग के अभिलाषी अर्थात्
विद्या, बुद्धि, तेज बल, पशुधन, यश कीर्ती व मोक्ष
प्राप्ति की नौका अग्निहोत्र है।

प्रकाशक :

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर (पंजी.)

पंजीकृत स0	:	99, दिनांक 10–03–1966
पंजीकृत कार्यालय	:	आर्यसमाज दयानन्द मार्ग सिटी चौक, जम्मू
वर्तमान कार्यालय	:	आर्य समाज मन्दिर बख्शी नगर जम्मू–180001
प्रथम संस्करण	:	2000 प्रतियां
विक्रमी सम्वत्	:	2071
सृष्टी सम्वत्	:	1960853115
दयानन्दाब्द	:	191
सहयोग राशि	:	10/– रु

हमारी आर्य संस्कृति में यज्ञों का विशेष महत्व है। इनमें एकरूपता लाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर प्रयासरत् है।

भारत भूषण आर्य	योगेश गुप्ता	रवि कान्त
सभा प्रधान	सभा कोषाध्यक्ष	सभा मंत्री
9419133884	9419192144	9419188830

हमारी संस्कृति और पंच महायज्ञ

हमारी आर्य संस्कृति में पांच महायज्ञों *ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, पितृ यज्ञ* और अतिथि यज्ञ को विशेष स्थान प्राप्त है। प्रत्येक यज्ञ का अपना–अपना वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। अग्नि होत्र अर्थात् देवयज्ञ आर्यों की संस्कृति में अपना एक महत्त्व पूर्ण स्थान रखता है। *सांसारिक प्राणियों के लिये यह नैतिक कर्म हैं। प्रत्येक मनुष्य को इन्हें यथा शक्ति अवश्य करना चाहिये।*

ईश्वर वाणी वेदों के आधार पर मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कारों का विशेष महत्व है। हमारी जीवन शैली में कोई भी संस्कार यज्ञ के बिना सम्पन्न नहीं होता। जिस प्रकार आटे दाल आदि से भोजन बनाने के लिए जल का होना आवश्यक है उसी प्रकार जीवन के मुख्य संस्कारों जैसे गर्भाधान, नामकरण, मुण्डन, विवाह, जन्मदिन और वर्षगांठ आदि शुभ अवसरों पर, हमारी सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार यज्ञ करना सर्वश्रेष्ठतमम् कर्म माना गया है।

प्रत्येक संस्कार में यज्ञ द्वारा वातावरण को सुगन्धित बनाकर हर्ष प्रकट करना सबसे उत्तम माना गया है। सुगन्धि विचारों की हो या वातावरण की, दोनों से ही ईश्वर और ईश्वर के बनाये सभी प्राणी प्रसन्न होते हैं। मनुष्य का दायरा सीमित होने से विचारों के आदान प्रदान का लाभ केवल थोड़े से प्राणियों को मिल पाता है। जबकि हवन विधि द्वारा उत्तम पदार्थों को यज्ञाग्नि में डालकर वातावरण में सुगन्धि

फैलाकर मनुष्य अपने दुश्मनों, पशु–पक्षी, पेड़ों आदि को भी अपने शुभ कार्यों में शामिल कर लेता है। इसीलिए यज्ञ को 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म' कहा गया है। यज्ञ अर्थात अग्निहोत्र आयुर्वेद का भी एक बहुत बड़ा अंग माना जाता है। भस्में बनाने के लिए अभ्रक, मुक्ता, रजत सुवर्ण आदि धातुओं को अग्नि का जितना अधिक ताप दिया जाता है, उससे इन धातुओं की रोग निवारण की शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है। जिस घर में प्रतिदिन यज्ञ होता है। वहां पर रोग के किटाणु कभी नहीं पनपते और खाने पीने की चीज़े जल्दी खराब नहीं होती।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगीराज श्री कृष्ण व ऋषियों आदि की परम्परा पर चलते हुए यज्ञ– विज्ञान को सभी मनुष्यों को अपनाना चाहिए। इस पुस्तक में सर्व साधारण के लिए मन्त्रों का इस प्रकार संधि–छेद किया गया है कि साधारण व्यक्ति भी सरलता से वेद के मन्त्रों का उच्चारण करके अपनी संस्कृति का अंग बन सकता है। व्याकरण की दृष्टि से अगर कुछ त्रुटियां हो तो क्षमाप्रार्थी हैं।

ईश्वर हमें सद्‌बुद्धि दे, हम यज्ञ विज्ञान को अपनाकर ईश्वर की बनायी सृष्टि के तत्वों और प्राणियों को सुख पहुंचा कर सदा कल्याण मार्ग पर चलते रहें।

भारत भूषण आर्य
सभा प्रधान

रवि कान्त
सभा मंत्री

प्रथम – ब्रह्म यज्ञ

ओम्। भूर् भुवः स्वः।
तत्–सवितुर्–वरेण्यम् भर्गो देवस्य
धीमहि। धियो यो नः प्रचो दयात्।

कवितार्थ गायत्री मंत्र

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझ से ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता तू।।
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु वस्तु मे, तू हो रहा है विद्यमान।।
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।

शब्दार्थ गायत्री मंत्र

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के रचयिता प्राण स्वरूप, दुःख विनाशक सब सुखों को देनेहारे प्रभु। अपनी आत्मा को आपके तेज़ से प्रकाशित करने के लिये हम आपके तेजस्वी स्वरूप को धारण करते हैं जो हमारी बुद्धियों को सभी बुरे कर्मो से अलग करके सदा उत्तम कार्यो की ओर प्रेरित करे।

वैदिक सन्ध्या–विधि

अथ आचमन–मन्त्रः

♦ओम् शन्नो देवी–रभिष्टय आपो–भवन्तु पीतये शंयो–रभि स्रवन्तु नः (यजुर्वेद, 6/12)

(मन्त्र बोलकर दायें हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें)

अथेन्द्रिय–स्पर्श–मन्त्राः

♦ओम् वाक् वाक्। ओम् प्राणः प्राणः। ओम् चक्षु चक्षुः। ओम् श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओम नाभिः। ओम् हृदयम्। ओम कण्ठः। ओम् शिरः। ओ बाहुभ्याम् यशोबलम्। ओम् करतल करपृष्ठे।।

अथ ईश्वर प्रार्थनापूर्वक–मार्जनमन्त्राः

♦ओम् भूः पुनातुः शिरसि। ओम् भुवः पुनात नेत्रयोः। ओम् स्वः पुनातु कण्ठे। ओम् महः पुना हृदये। ओम् जनः पुनातु नाभ्याम्। ओम् तपः पुना पादयोः। ओम् सत्यम् पुनातु पुनः शिरसि। ओ खम् ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।।

अथ प्राणायाम–मन्त्राः

♦ओम् भूः। ओम् भुवः। ओम् स्वः। ओम् महः ओम् जनः। ओम् तपः। ओम् सत्यम्।।

(कम से कम 3 व अधिक से अधिक 21 प्राणायाम करें)

अथ अंघमर्षण मन्त्राः

♦ओम् ऋतं च सत्यम् चा—भीद्धात् तपसो—
ध्याजायत, ततो रात्र्य—जायत ततः समुद्रोऽ—अर्णवः।

♦समुद्रा—दर्णवा—दधि संवत्सरो—अजायत,
अहो—रात्राणि विदध—द्विश्वस्य मिषतो वशी।

♦सूर्य्या चन्द्र—मसौ धाता यथा पूर्वम्—अकल्पयत्,
देवं च पृथिवीम् चान्तरिक्ष—मथो स्वः।

अथ आचमन मन्त्राः

♦ओम् शन्नो देवी—रभिष्टय आपो—भवन्तु पीतये।
शंयो—रभि—स्रवन्तु नः।

अथ मनसा—परिक्रमा मन्त्राः

♦ओम् प्राची—दिग—अग्नि—रधिपति—रसितो
रक्षिता— दित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽ—धि—पतिभ्यो,
नमो रक्षितृ—भ्यो नम, इषुभ्यो नम, ऐभ्यो अस्तु।
यो३—अस्मान् द्वेश्टि यम् वयं द्विश्म—स्तम् वो जम्भे
दध्मः {1}

♦ओम् दक्षिणा दिगिन्द्रो—धि—पतिस्ति—रष्चिराजी
रक्षिता पितर इशवः। तेभ्यो नमोऽ—धि—पतिभ्यो
नमो, रक्षितृ—भ्यो नम, इषुभ्यो नम, ऐभ्यो अस्तु।
यो३—अस्मान् द्वेश्टि यम् वयं द्विश्म—स्तम् वो
जम्भे दध्मः {2}

♦ओम् प्रतीची दिग्–वरुणो–अधि–पति
पृदाकू–रक्षिता–अन्न मिशवः। तेभ्यो नमोऽ–धि
पतिभ्यो नमो, रक्षितृ–भ्यो नम, इषुभ्यो नम, ऐभ्य
अस्तु। यो३–अस्मान् द्वेष्टि यम् वयं द्विष्म–स्त
वो जम्भे दध्मः {3}

♦ओम् उदीची दिक् सोमोऽ–धिपतिः स्वज
रक्षिता– शनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽ–धि पतिभ्य
नमो, रक्षितृ–भ्यो नम, इषुभ्यो नम, ऐभ्यो अस्तु
यो३–अस्मान् द्वेष्टि यम् वयं द्विष्म–स्तम् वो जम्भे
दध्मः {4}

♦ओम् ध्रुवा दिग्–विष्णु–रधिपतिः कल्माष–ग्रीव
रक्षिता वीरुद्ध– इषवः। तेभ्यो नमोऽ–धि पतिभ्य
नमो, रक्षितृ–भ्यो नम, इषुभ्यो नम, ऐभ्यो अस्तु
यो३–अस्मान् द्वेष्टि यम् वयं द्विष्म–स्तम् वो जम्भे
दध्मः {5}

♦ओम् ऊर्ध्वा दिग्–बृहस्पति–रधिपतिः श्वित्रो
रक्षिता वर्ष–मिशवः। तेभ्यो नमोऽ–धि पतिभ्यो
नमो, रक्षितृ–भ्यो नम, इषुभ्यो नम, ऐभ्यो अस्तु
यो३–अस्मान् द्वेष्टि यम् वयं द्विष्म–स्तम् वो जम्भे
दध्मः {6}

अथ उपस्थान मन्त्राः

♦ओम् उद् वयम् तम–सस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवम् देवत्रा सूर्य–मगन्म ज्योति–रुत्तमम् {1}

♦ओम् उदुत्यम् जातवेदसम्–देवम् वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् {2}

♦ओम् चित्रम् देवाना–मुदगाद–नीकम् चक्षुर्–मित्रस्य वरुण–स्याग्नेः आप्रा द्यावापृथिवी–अन्तरिक्षम् सूर्य–आत्मा जगतस्–तस्थु–षष्च स्वाहा। {3}

♦ओम् तच्चक्षुर् – देवहितम् पुरस्ताच्–छुक्र–मुच्चरत्। पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम् श्रृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतम् अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयष्च शरदः शतात् {4}

अथ गायत्री–मंत्राः

♦ओम्। भूर् भुवः स्वः। तत्–सवितुर्–वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचो दयात्।

अथ समर्पणम्

♦हे ईश्वर दयानिधे। भवत्–कृपयानेन जपोपासना–दि–कर्मणा धर्मार्थ–काम–मोक्षाणाम् सद्यः सिद्धिर्–भवेन्नः

नमस्कार–मन्त्राः

♦ओम् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सन्ध्या के मन्त्रों का संक्षिप्त अर्थ

सम्पूर्ण जड़ और चेतन जगत की रचना करके प्रत्येक प्राणी मात्र का कल्याण करने वाले परम पिता परमेश्वर, आप हमें वह सभी सुख–साधन प्रदान करें कि हम शुद्ध खानपान का सेवन करके, प्राणायाम द्वारा अपने शरीर मन व इन्द्रियों के दोषों को दूर करके यशस्वी और बलशाली बनें। हे प्रभु हम अपने अंतःकरण में आपकी दिव्य शक्तियों की अनुभूति करते हुए सदा पवित्र कर्म करें और आपकी आज्ञाओं का पालन करने में तत्पर रहें ।

सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, समुद्र, वायु, आकाश, जीव, वृक्ष, रात–दिन, लोक लाकान्तरों आदि की रचना करके साक्षी भाव से सृष्टि की प्रत्येक गतिविधि पर हर पल नजर रखने वाले प्रहरी प्रभु। हमें ऐसा आत्म और शारीरिक बल प्रदान करें कि हम हर पल आपकी अनुभूति करते हुए कभी भी पाप कर्म न करें।

अनन्त ज्ञान के महा प्रणेता प्रभु। हमें भी वेदों में रचित ज्ञान और विज्ञान प्रदान करें कि हम चारों दिशाओं

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, पृथ्वी और आकाश लोक में रहने वाले सभी विषधर प्राणियों सांसारिक दुष्टों तथा अविद्या रूपी अंधकार से अपनी और दूसरे प्राणियों की रक्षा कर सकें। अज्ञानवश हम किसी से या कोई हमारे साथ वैर–विरोध करता है तो हम न्याय के लिये आप की व्यवस्था पर छोड़ते हैं।

सब प्रकार की अविद्याओं और पाखण्ड से रहित प्रभु। राग–द्वेष–मोह आदि वासनाओं से हमारी रक्षा करके हमें सौ वर्षों तक सुखपूर्वक जीने के सभी साधन प्रदान करें। हे दया के सागर हम बार बार आपको नमन करते हैं कि आप पर हमारी पूर्ण श्रद्धा और विश्वास सदा बना रहे। जीवन के सभी सुखों को भोगते हुए, कल्याण मार्ग के पथ पर चलकर हम जन्म–मृत्यु के बन्धन से छूटकर मोक्ष के अधिकारी बनें।

(सध्या के मन्त्रों का संक्षिप्त अर्थ सहित चिन्तन व मनन करें)

स्वस्थ व सुखी रहने के सूत्र

योग और यज्ञ विज्ञान एक दूसरे के पूरक शब्द हैं। दोनों का कार्य शरीर की शुद्धि करना है। योग से शरीर की शुद्धि होती है यज्ञ से शरीर के साथ–साथ धर के वातावरण और ब्रह्माण्ड की शुद्धि होती है।

द्वितीय – देव यज्ञ

यज्ञ से पूर्व आवश्यक निर्देष

1. यज्ञ करने का स्थान स्वच्छ व पवित्र हो। यजमान नहा धोकर तन मन से पवित्र हो कर बैठे।
2. यज्ञ वेदी पर बैठते समय अपने पास चमड़े की कोई भी वस्तु जैसे बैल्ट, पर्स, घड़ी का पट्टा न रखें।
3. व्यवस्थानुसार खुले बैठें। साथ में बैठे व्यक्ति का आपस में स्पर्श न हो। अपना मोबाइल बन्द रखें।
4. यज्ञ के दौरान आने वाला कोई भी व्यक्ति आपके लिये कितना ही खास (VIP) क्यूं न हो, आपका ध्यान यज्ञ से नहीं हटना चाहिये।
5. मन्त्रोच्चारण करने के इच्छुक व्यक्ति पुरोहित जी के साथ स्वर मिलाकर मन्त्रगान करें, या केवल सुनें।
6. यजमान पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
7. सामग्री दायें हाथ की मध्यमा (Centre) व अनामिका (Ring finger) तथा अंगूठे (thumb) को मिला कर अर्पित करे। तर्जनि का प्रयोग न करें।
8. सामग्री बढ़िया हो। समिधा स्चच्छ व कीड़ा लगी न हों।
9. बाहर गिरी हुई सामग्री को यज्ञ कुंड में कभी न डालें।
10. आचमन करने के बाद हाथ को सिर पर न लगायें।
11. यज्ञ के अंत में सर्वम् वै पूर्णम् की आहूति के बाद किसी को भी यज्ञ में आहूति डालने का अधिकार न दें।

अथेश्वर–स्तुति–प्रार्थनोपासना मन्त्राः

♦ओम् विश्वानि देव सवितर्–दुरितानि परा सुव। यद् भद्रम् तन्न आ सुव। {1}

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है,
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे,
मंगलमय गुण कर्म पदार्थ, प्रेम सिन्धु हमको दीजे।।

♦ओम् हिरण्य–गर्भः समवर्–तताग्रे भूतस्य जातः–पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीम् द्या–मुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम। {2}

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है,
सूर्य चन्द लोकादिक को तू, रचता और टिकाता है।
पहले था अब भी तू ही है, घट घट में व्यापक स्वामी,
योग–भक्ति तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी।।

♦ओम् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः। यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम । {3}

तू ही आत्मज्ञान बलदाता, सुयश विज्ञ–जन गाते हैं
तेरे सत्य स्वरूप को पाकर, भव सागर तर जाते हैं।
तुझ संग रहना ही जीवन है, मरण तुझे बिसराने में
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।।

•ओम् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक–इद्राजा जगतो वभूव। य ईषे–अस्य द्विप–दश्च–तुशपदः कस्मै देवाय हविशा विधेम। {4}

अपनी अनुपम माया से प्रभु, जग–ज्योति चमकाई है,
मनुज, गाय, पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रकटाई है
अपने हृदय सिंहासन पर, श्रद्धा से तुम्हें बिठाते हैं
भक्ति भाव से भेटें लेकर, शरण तुम्हारी आते हैं।

•ओम् येन द्यौ–रुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितम् येन नाकः। योऽ–अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविशा विधेम । {5}

तारे, रवि–चन्द्रादिक रचकर, निज प्रकाश चमकाया है,
धरणी को धारण कर प्रभुवर, कौशल अलख लखाया है।
तू ही विश्व विधाता पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें,
शुद्ध भाव से भगवन तेरे, भजनामृत का पान करें।

•ओम् प्रजापते न त्व—देता—न्यन्यो विश्वा जातानि परि ता वभूव। यत्का—मास्ते जुहु—मस्तन्नोऽ—अस्तु वयम् स्याम पतयो रयीणाम्। {6}

तुझ से बड़ा न कोई जग में, सब में तू ही समाया है
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझ में आश्रय पाया है
सुख की कामना हेतु प्रभुवर, तेरा आश्रय पाते है
हेतु रहित अनुराग दीजिये, यही भक्त को भाया है

•ओम् स नो बन्धुर्—जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृत—मानशाना—स्तृतीये धामन्न—ध्यै—रयन्त। {7}

तू है गुरू, पितु—मात भी तू है, पाप पुण्य फलदाता है
तु ही बंधु और सखा भी तू, तुझ से ही सब नाता है
भक्तों को इस भव बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज अद्वैत महाप्रभु, सर्व काल का ज्ञाता है।

•ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान। युयो—ध्यस्—मज्—जुहुराण—मेनो भू—यिष्ठान्ते नम उक्तिम् विधेम। {8}

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजन हार है
आप्त लोगों के द्वारा, बतलायें जो ज्ञान का सार हैं
कुटिल पाप से हमें बचाते, रहना हरदम दया निधान।
अपने भक्त जनों को भगवन, दीजे यही विषद् वरदान।

अब विश्वानि देव आदि मन्त्रों के अर्थ का संक्षिप्त उच्चारण करें

हे सकल जगत के उत्पत्ति–कर्ता समग्र एश्वर्य –युक्त, शुद्ध स्वरूप, स्वप्रकाश रूप प्रभो! आपने अपनी अनन्त शक्तियों के द्वारा जड़ और चेतन जगत के साथ मनुष्य व गौ आदि प्राणियों के शरीरों की रचना करके, सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करने हारे सूर्य–चन्द्रमा आदि नक्षत्र अपने गर्भ में धारण किये हैं। अपने ज्ञान द्वारा शरीर, समाज और आत्मा को बल देने हारे तीनों कालों में एकरस रहने वाले प्रसिद्ध चेतन–स्वरूप। तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य और भूमि को धारण करके आकाश में सभी लोक–लोकान्तरों का निर्माण और उन्हें गति देने वाले सब प्रजाओं के स्वामी, आप–द्वारा रचित ज्ञान–विज्ञान को कोई तिरस्कार नहीं करता।

अपने ज्ञान और विज्ञान से सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करने हारे हे स्वप्रकाश रूप प्रभो। आप हमारे अन्तःकरण में आप्त लोगों के मार्ग से अपने ज्ञान की ज्योति जलाकर हमें कुटिलता व पापयुक्त कर्मों से मुक्त करें। राज–ऐश्वर्य आदि सुखों को भोग कर, आपके परम

आनन्द द्वारा मोक्षावस्था को प्राप्त करके हम सदा आपके आश्रय में रहें।

(सप्ताहिक यज्ञ में स्वस्ति–वाचनम् और शान्ति–करणम् के मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिये)

अग्नि होत्र (हवन) आरम्भ विधि

(आचमन करने के तीन मंत्र)

♦ओम् अमृतो–पस्तरण–मसि स्वाहा {1}

♦ओम् अमृता– पिधान–मसि स्वाहा {2}

♦ओम् सत्यम् यशः श्रीर्–मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा {3}

(जल से अङ् स्पर्ष करने के मंत्र)

बायें हाथ की हथेली में जल लें। दायें हाथ की बड़ी व अनामिका अंगुली जल में डुबोकर नीचे बताये अंगों को स्पर्ष करें।

♦ओम् वाङ् म आस्ये–अस्तु। मुख पर दोनों होंठो के मध्य में

♦ओम् नसोर् मे प्राणो–अस्तु।नाक का दायां व बायां भाग

♦ओम् अक्ष्णोर् मे चक्षुर्–अस्तु। दायीं व बायीं आंख पर

♦ओम् कर्णयोर् मे श्रोत्रम्–अस्तु। दायां व बायां कान

♦ओम् बाह्–वोर् मे बलम्–अस्तु।दायां व बायां कन्धा

♦ओम् ऊर्–वोर् मे ओजो–अस्तु। दायां व बायां घुटना

♦ओम् अरिष्टानि मे अन्गानि तनू–स्तन्वा मे सह सन्तु।। अन्त में आंख पर जल के छींटे दें

दीपक जलाने का मन्त्रः

ओम् भूर्भुवः स्वः

(यज्ञ कुण्ड में अग्नि स्थापित करने का मंत्र)

◆ओम् भूर्भुवः स्वर्–द्यौरिव भूम्ना पृथिवी–व वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठे–अग्निम्–अन्ना–दमन्ना–द्यायादधे।।

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

◆ओम् उद्–बुध्य–स्वाग्ने प्रति–जागृहि त्वमिष्टा–पूर्ते सम्–सृजे–थामयम् च। अस्मिन्त्–सधस्थे अध्युत्त–रस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

घी में डुबोकर 3 समिधायें चढ़ाने के मन्त्र

◆ओम् अयं त इध्म आत्मा जात–वेद–स्तेने –ध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्–ब्रह्म–वर्च से–नान्नाद्येन समेधय स्वाहा इदम् अग्नये जातवेद से इदन्न मम । {1}

◆ओम् समिधा–अग्निम् दुवस्यत घृतैर्–बोधयता–तिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदम्–अग्नये–इदन्नमम {2}

•ओम् सु—समिद्धाय शोचिषे घृतम् तीव्रम् जुहोतन अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदम्—अग्नये जातवेदसे—इदन्न मम {3}

(उपरोक्त दो मत्रों से दूसरी समिधा चढ़ायें)

•ओम् तन्त्वा समिद्—भिर—अंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा।। इदम् अग्नये अंगिःरसे—इदन्न मम {4}

(नीचे लिखे मन्त्र को 5 बार बोलकर घी से 5 आहुतियां दें)

•ओम् अयं त इध्म आत्मा जात—वेद—स्तेने—ध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्—ब्रह्म—वर्चसे—नान्ना—द्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम

जल प्रसेचन के मंत्र

(४)
पूर्व (१)
उत्तर (३)
हवन-कुण्ड
दक्षिण
पश्चिम (२)
यजमान
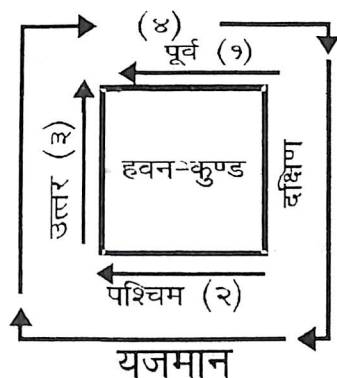
•ओम् अदिते–अनुमन्यस्व

(इस मंत्र से वेदी के दक्षिण–पूर्व कोण से पूर्व–उत्तर कोण की तरफ जल छिड़कावें)

•ओम् अनुमते–अनुमन्यस्व

(इस मंत्र से वेदी के दक्षिण–पश्चिम कोण से पश्चिम–उत्तर कोण की तरफ जल छिड़कावें)

•ओम् सरस्वत्य–नुमन्यस्व

(इस मंत्र से वेदी के पश्चिम–उत्तर कोण से उत्तर–पूर्वकोण की तरफ जल छिड़कावें)

•ओम् देव सवितः प्रसुव यज्ञम् प्रसुव यज्ञ–पतिम् भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्–पतिर्–वाचम् नः स्वदतु

(इस मंत्र से वेदी के उत्तर पूर्व (ईशान कोण) से कुण्ड के चारों ओर जल छिड़कावें।)

निम्न मन्त्रों से घी की चार आहुतियां दें

•ओम् अग्नये स्वाहा। इदम्–अग्नये–इदन्न मम {1}

(इस मंत्र से वेदी के उत्तर भाग में जलती हुई समिधाओं पर आहुति देवें।)

•ओम् सोमाय स्वाहा। इदम्–सोमाय–इदन्न मम {2}

(इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में जलती हुई समिधाओं पर आहुति देवें।)

•ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदम् प्रजापतये इदन्न मम {3}
•ओम इन्द्राय स्वाहा। इदम्–इन्द्राय इदन्न मम {4}

(उपरोक्त मन्त्र स0 3 व 4 से यज्ञ कुण्ड के मध्य में आहुति दें)

निम्न मन्त्रों से घी व सामग्री से आहुतियां दें

(प्रातः कालीन आहुति के मंत्र)

• ओम् सूर्यो ज्योतिर्–ज्योतिः सूर्यः स्वाहा {1}
• ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्–वर्चः स्वाहा {2}
• ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा {3}
•ओम् सजूर्–देवेन सवित्रा सजू–रुष–सेन्द्र –वत्या जुशाणः सूर्यो वेतु स्वाहा {4}

(अगर सायं काल में यज्ञ नहीं करना है तो निम्न मन्त्रों को सांय कालीन यज्ञ के मन्त्रों से प्रातः कालीन यज्ञ में ही आहुतियां दें)

•ओम् अग्निर्–ज्योतिर्–ज्योतिर्–अग्निः स्वाहा {1}
•ओम् अग्निर्–वर्चो ज्योतिर्–वर्चः स्वाहा। {2}

(निम्न तीसरे मंत्र को मन में उच्चारण करके मौन आहुति दें)

•ओम् अग्निर्–ज्योतिर्–ज्योतिर्–अग्निः स्वाहा {3}
•ओम् सजूर्–देवेन सवित्रा सजू–रात्र्येन्द्र–वत्या जुशाणो अग्निर्वेतु स्वाहा {4}

(प्रातः व सायं दोनो काल के सामान्य मंत्रों की आहुतियां दें)

♦ओम् भूर्–अग्नये प्राणाय स्वाहा। इदम्–अग्नये प्राणाय – इदं न मम {1}

♦ओम् भुवर्–वायवे–अपानाय स्वाहा। इंद वायवे–अपानाय इदं न मम। {2}

♦ओम् स्वर्–आदित्याय व्यानाय स्वाहा। इदम–आदित्याय व्यानाय – इदन्न मम। {3}

♦ओम् भूर्–भुवः स्वर्–अग्नि–वाय्वा–दित्येभ्यः प्राणा–पानव्या–नेभ्यः स्वाहा।। इदम्– अग्नि– वाय्वा–दित्येभ्यः प्राणा–पानव्या–नेभ्यः–इदन्न मम। {4}

♦ओम् आपो ज्योति–रसो–अमृतम् ब्रह्म–भूर्भुवः स्वरों स्वाहा। {5}

♦ओम् याम् मेधाम् देवगणाः पित–रश्चो–उपासते। तया मामद्य मेधया–अग्ने मेधाविनम् कुरु स्वाहा {6}

♦ओम् विश्वानि देव, सवितर्–दुरितानि परा सुव यद्भ–द्रम् तन्न आ सुव स्वाहा {7}

•ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयो–ध्यस्मत्–जुहु–राणमेनो भूयिश्ठां ते नम उक्तिम् विधेम स्वाहा {8}

(अब तीन या इससे अधिक आहुतियां गायत्री मंत्र से दे सकते हैं)

•ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्–वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा।।

(अन्त में तीन बार निम्न मन्त्र द्वारा घी व सामग्री डालकर यज्ञ की पूर्णाहुति करें)

•ओम् सर्वम् वै पूर्णम् स्वाहा। –3 बार

।। इति दैनिक अग्निहोत्रमन्त्राः।।

पूर्ण यज्ञ प्रकरणम्

निम्न आठ आहुतियाँ घी से दें

•ओम् अग्नये स्वाहा। इदम्–अग्नये–इदन्न मम {1}

(इस मंत्र से वेदी के उत्तर भाग में जलती हुई समिधाओं पर आहुति देवें।)

•ओम् सोमाय स्वाहा। इदम्–सोमाय–इदन्न मम {2}

(इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में जलती हुई समिधाओं पर आहुति देवें।)

•ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदम् प्रजापतये इदन्न मम {3}

•ओम इन्द्राय स्वाहा इदम्–इन्द्राय इदन्न मम {4}

(मन्त्र क्रम 3 व 4 से यज्ञ कुण्ड के मध्य में आहुति दें)

निम्न मन्त्रों से घी व सामग्री से आहुतियां दें

व्याहृति की चार आहुतियाँ

- ओम भूर्–अगन्ये स्वाहा। इदम्–अग्नये इदन्न मम
- ओम भुवर्–वायवे स्वाहा। इदम् वायवे इदन्न मम।
- ओम स्वर्–आदित्याय स्वाहा।
  इदम्–आदित्याय–इदन्न मम।। {3}
- ओम भूर्भवः स्वर्–अग्नि–वाय्वा–दित्येभ्यः स्वाहा।

इदम्–अग्नि–वाय्वा–दित्येभ्यः–इदन्न मम।। {4}

स्विष्ट कृद् आहुति मंत्र (घी या भात से)

- **ओम यदस्य कर्मणो–अत्यरीरिचम् यद्वा न्यून–मिहाकरम्। अग्निष्ट–तत् स्विष्ट–कृद् विद्यात् सर्वम् स्विष्टिम् सुहुतम् करोतु मे अग्नये स्विष्ट–कृते सुहुतहुते सर्व–प्रायश्चित्ता–हुतीनाम् कामानाम् समर्ध– यित्रै सर्वान्नः कामान्त्–समर्धय स्वाहा।। इदम्–अग्नये स्विष्ट–कृते–इदन्न मम।।**

{निम्न प्रजापतये की आहुति मन में बोलकर घी से दें}

- ओम् प्रजापतये स्वाहा।। इदम् प्रजापतये इदन्न मम

{निम्न चार आज्याहुतिया केवल घी से दें}

♦ओम् भूर् भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस, आ सुवोर्ज–मिशम् च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम स्वाहा। इदम् अग्नये पवमानाय इदन्न मम। {1}

♦ओम् भूर् भुवः स्वः। अग्निर्–ऋषिः–पवमानः, पान्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम् स्वाहा। इदम् अग्नये पवमानाय इदन्न मम। {2}

♦ओम् भूर् भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वचः सुवीर्यम्। दधद्रयिम् मयि पोशम् स्वाहा। इदम् अग्नये पवमानाय इदन्न मम। {3}

♦ओम् भूर् भुवः स्वः। प्रजापते न त्व–देता–न्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्का–मास्ते जुहु–मस्तन्नोऽ–अस्तु वयम् स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदम्– प्रजापतये इदन्न मम। {4}

{निम्न आठ अष्टाज्याहुतियां घी और सामग्री से दें}

♦ओम् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळो अवया–सिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्–ध्यस्मत् स्वाहा। इद–मग्नी–वरुणा–भ्याम् इदन्न मम। {1}

♦ओम् स त्वम् नो अग्ने अवमो भवोती, नेदिष्ठो अस्या उशसो व्युश्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणम रराणो, वीहि मुळीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इद–मग्नी–वरुणा–भ्याम् इदन्न मम। {2}

♦ओम् इमम् में वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा।। इदम् वरुणाय–इदन्न मम।। {3}

♦ओम् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमा–नस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्य–उरुशंस मा न आयुः प्र मोशीः स्वाहा।। इदम् वरुणाय–इदन्न मम। {4}

♦ओम् ये ते शतम् वरुणम् ये सहस्त्रम् यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुन्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदम् वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्–भ्यः स्वर्के–भ्यः–इदन्न मम।। {5}

♦ओम् अयाश्चा–अग्ने–अस्य–नभिशस्ति–पाश्च सत्य–मित्त्व–मया असि। अया नो यज्ञम् वहा–स्यया नो धेहि भेषजम् स्वाहा।। इद–मग्नये अयसे इदन्न मम।। {6}

♦ओम उदुत्तमम् वरुण पाश–मस्म–दवाधमम् वि मध्यमम् श्रथाय। अथा वयमा–दित्य व्रते तवा–नागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदम् वरुणाया आदित्याया अदितये च इदन्न मम।। {7}

♦ओम् भवतन्नः समनसौ सचेत–सावरेपसौ । मा यज्ञम् हिँ सिष्टम् मा यज्ञपतिम् जात वेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदम्– जात– वेदो–भ्याम्–इदन्नमम।। {8}

{अन्त में निम्न देय गायत्री व विशेष मंत्रों से घी और सामग्री द्वारा आहुतियां दे कर यज्ञ की पूर्णाहुति करें}

{गायत्री मंत्र}

♦ओम्। भूर् भुवः स्वः। तत्–सवितुर्–वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचो दयात् स्वाहा।

{महा मृत्यन्जय मंत्र}

♦ओम् त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्–मृत्योर्–मुक्षीय–मामृतात् स्वाहा।

{राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्र}

•ओम आ ब्रह्मण ब्राह्मणो ब्रह्म–वर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर–इष–व्यो–तिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ा–नडवानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्–योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे–निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा।

{ स्तुति मंत्र }

•ओम स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणम् प्रजाम् पशुम् कीर्तिम् द्रविनम् ब्रह्म–वर्चसम्। मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्म–लोकम स्वाहा।

{ नमस्कार मंत्र }

•ओम नमः शम्भवाय च, मयो भवाय च,
नमः शंकराय च, मयस्कराय च
नमः शिवाय च, शिवतराय च स्वाहा।

•ओम् सर्वम् वै पूर्णम् स्वाहा। –3 बार

यज्ञ प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्जवल कीजिये,
छोड़ देवें छल–कपट को मानसिक बल दीजिये।
वेद की बोलें ऋचाऐं सत्य को धारण करें,
हर्ष में हों मग्न सारे शोक–सागर से तरें।
अश्वमेधादिक रचाऐं यज्ञ पर उपकार को,
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें,
रोग–पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की,
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नार की।
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिये,
वायु–जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये।
स्वार्थ–भाव मिटे हमारा प्रेम–पथ विस्तार हो,
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
हाथ जोड़ झुकाए मस्तक वन्दना हम कर रहे,
नाथ करुणा रूप करुणा आप की सब पर रहे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।
सबका भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान,
सब पर कृपा करो भगवान, सबका सब विधि हो कल्याण।

त्वमेव माताच पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम् देव–देव।

हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुःखारी।
सब हों निरोग भगवन, धन–धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुःखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

मंगलकामना

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सब की भगवन् पूरी होय।।1।।
विद्या– बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय।
दूध पूत धन–धान्य से, वंचित रहे न कोय।।2।।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग–द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।3।।
मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।4।।
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय के, सबको करो निहाल।।5।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम–अपार।
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार।।6।।
नारायण तुम आप हो, पाप विमोचन हार।
दूर करो दुर्गुण सभी, कर दो भव से पार।।7।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिए कृपा निधान।
साधु–संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।8।।

शान्ति पाठ

•ओम् द्यौः शान्तिर्–अंतरिक्षम् शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति–रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्–विश्वे देवः शान्तिर्–ब्रह्म शान्तिः सर्वम् शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिर् एधि। ओम् शान्ति शान्ति शान्तिः।।

3–बलिवैश्वदेव यज्ञ

घृत या घृत मिश्रित भात से 10 आहुतियां दें

•ओम् अग्नये स्वाहा।1। ओम् सोमाय स्वाहा।2। ओम् अग्नि शोमाभ्याम् स्वाहा।3।ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।4। ओम् धनवन्तरये स्वाहा।5। ओम् कुह्वै स्वाहा।6। ओम् अनुमत्यै स्वाहा।7। ओम् प्रजापतये स्वाहा।8। ओम् द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा।9। ओम् स्विष्टकृते स्वाहा।10।

पौर्णमाशी की 3 आहूतियां

•ओम् अग्नये स्वाहा।

•ओम् अग्नि–शोमाभ्याम् स्वाहा।

•ओम् विष्णवे स्वाहा

अमावस्या की 3 आहूतियां

•ओम् अग्नये स्वाहा।

♦ओम् इन्द्राग्नी–भ्याम् स्वाहा।

♦ओम् विष्णवे स्वाहा

पौर्णमाशी व अमावस्या की 3 आहूतियां देने के बाद

वयाहृति की निम्न 4 आहूतियां दें

♦ओम भूर्–अगन्ये स्वाहा। इदम्–अग्नये इदन्न मम ।

♦ओम भुवर्–वायवे स्वाहा।। इदम् वायवे इदन्न मम।

♦ओम स्वर्–आदित्याय स्वाहा।। इदम् –आदित्याय–इदन्न मम।। {3}

♦ओम भूर्भवः स्वर्–अग्नि–वाय्वा–दित्येभ्यः स्वाहा। इदम् –अग्नि–वाय्वा–दित्येभ्यः–इदन्न मम।। {4}

4–पितृ यज्ञ

पितरों की सेवा अर्थात जीवित माता पिता व परिवार के जीवित बुजुर्गों की सेवा करना। उनके उचित रहन सहन वस्त्र और बलवर्धक पेय, फलों के रस, मिष्ठ पदार्थ, घी, दूध, अन्न और पके फल खिलाने को पितृ यज्ञ कहते हैं।

5–अतिथि यज्ञ

धार्मिक, परोपकारी, पक्षपातरहित सबका भला चाहने वाले, केवल सत्य का उपदेश करने वाले पुरुषों के बताये या बिना बताये घर में आगमन होने पर उनका सत्कार करने, बैठने के लिये अच्छा आसन देने, खाने में अच्छे अन्न द्वारा उनकी सेवा करके उनका सत्संग कर ज्ञान चर्चा द्वारा उनसे धर्म और शरीर से सम्बन्धित योग विज्ञान जैसे विषयों पर शंका समाधान करने को अतिथि यज्ञ कहते हैं।

ईश्वर विनय

भगवान आर्यों को पहली सी लगन लगा दे।
वैदिक धर्म की खातिर मिटना इन्हें सिखा दे।।

फिर राम कृष्ण निकले घर घर गली गली से।
अर्जुन व कर्ण जैसे योद्धा रणस्थली से।
भीष्म से ब्रह्मचारी और भीम महाबली से।
गौतम कणाद जैमिनी ऋष्विर पतन्जलि से।
फिर से कोई दयानन्द जैसा ऋषि दिखा दे ——

ऐसे हो लाल पैदा खेले जो गोलियों से।
भूमि को तृप्त कर दें श्रद्धा की झोलियों से।
गूंजे ये देश मेरा शेरों की बोलियों से।
बिस्मिल गुरु भगतसिंह वीरों की टोलियों से।
इनके वतन की खातिर फांसी पे भी हंसा दे ——

कोई लेखराम जैसा गुरुदत्त दयाल होवे।
कोई श्रद्धानन्द होवे कोई हंसराज होवे
बढ़ती बीमारियों का फिर से इलाज होवे।
नेतृत्व जिनका पाकर उन्नत समाज होवे।
बेधड़क लाजपत सा फिर से पथिक बना दे ——

ऋषिवर दयानन्द को श्रदांजलि

धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा दिया

सो–सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया। धन्य...

अन्धों को आँख मिल गई, मुर्दों में जान आ गई,
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया। धन्य...

तुझ में कुछ ऐसी बात थी, दयानन्द तेरी बात पर,
लाखों शहीद हो गए, लाखों ने सिर कटा दिया। धन्य...

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने पे खाई गोलियाँ,
हँस–हँस के हंसराज ने, तन, मन व धन लुटा दिया। धन्य...

अपने लहु से लेख राम, तेरी कहानी लिख गया,
तूने ही लाला लाजपत, शेर–ए–बबर बना दिया। धन्य...

तेरी दिवाने जिस घड़ी, चहुं दिशा को चल दिये,
हैरत में लोग रह गये, दुनिया का दिल हिला दिया। धन्य...

माता व पिंता का ऋण

हम कभी माता–पिता का, ऋण चुका सकते नहीं।

इनके जो अहसान है कितने, गिना सकते नहीं।।

वो कहां पूजा में शक्ति, वो कहां फल जाप का।

होता है इनकी कृपा से, खातमा सन्ताप का।

इनकी सेवा से मिले धन ज्ञान, बल लम्बी उमर।

स्वर्ग से बढ़कर है जग में, आसरा मां बाप का

इनकी तुलना में किसी को हम मिला सकते नहीं।।

देख लें हम को दुखी तो, भरलें अपने नैन ये।
इक हमारे सुख की खातिर, तड़पते दिन रैन ये।
भूख लगती, प्यास न और, नींद भी आती नहीं।
कष्ट हो तन पर हमारे, हो उठे बेचैन ये।
इनसे बढ़कर देवता भी, सुख दिला सकते नहीं ।।

पढ़लों वेद और शास्त्र का बस, एक यही धर्म है।
योग्यतम सन्तान का यह, सबसे उत्तम कर्म है।
जगत् में जब तक जियें, सेवा करें मां बाप की।
इनके चरणों में तो तन मन घन लुटाना घर्म है
यह 'पथिक' वह सत्य है, जिसको झुठा सकते नहीं ।।

ओउम् है जीवन हमारा

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है।
ओम् है कर्ता–विधाता, ओम् पालनहार है।।1।।

ओम् है दुःख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है।
ओम् है बल–तेजधारी, ओम् करुणाकन्द है।।2।।

ओम् सबका पूज्य है हम, ओम् का पूजन करें।
ओम् ही के जाप से हम, शुद्ध अपना मन करें।।3।।

ओम् का गुरु–मन्त्र जपने–से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन–प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।4।।

ओम् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओम् हमको, मोक्ष तक पहुँचाएगा।।4।।

ध्वज गीत

जयति ओ३म ध्वज व्योम बिहारी।
विश्व प्रेम सरिता अति प्यारी।
सत्य सुधा बरसाने वाला, स्नेह लता सरसाने वाला।
सौम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भव भयहारी।।
इसके नीचे बढ़े अमय–मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी।।
इसी ध्वजा के नीचे आकर ऊंच नीच का भेद भुला कर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखण्ड बिसारी।।
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद ज्ञान घर घर में।
सुभग शान्ति फैले घर घर में, मिटे अविद्या की अंधियारी।।
आर्यजाति का यश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्यजनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी।।

प्रभु सिमरण

तेरे नाम का सुमिरन करके, मेरे मन में सुख भर आया
तेरी कृपा को मैने पाया, तेरी दया को मैने पाया
दुनिया की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा
न पाकर अपना कोई, जब मैने तुम्हें पुकारा
हे नाथ मेरे सिर ऊपर, तूने अमृत बरसाया –तेरी कृपा
तू संग में था नित मेरे, यह नैना देख न पाये
चंचल माया के रंग में, यह नैन रहे उलझाये
जितनी भी बार गिरा हूं, तूने पग पग मुझे उठाया–तेरी कृपा

भवसागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नैया
तट छूना भी मुश्किल था, नहीं दीखे कोई खिवैय्या
तू लहर बना सागर की,मेरी नाव किनारे लाया–तेरी कृपा
हर तरफ तुम्ही हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा
निर्लेप प्रभुजी मेरे, हर रूप तुम्ही ने धारा
तेरी शरण में हो के दाता, तेरा तुम को ही चढ़ाया–तेरी कृपा

वैदिक जयघोष

1. जो बोले सो अभय	वैदिक धर्म की जय
2. मर्यादा पुरुषोत्तम	श्री रामचन्द्र की जय
3. योगेश्वर श्री कृष्ण चन्द्र की	जय
4. गुरुवर विरजानन्द की	जय
5. महर्षि दयानन्द सरस्वती की	जय
6. संसार के सभी श्रेष्ठ पुरुषों की	जय
7. देश पर शहीद होने वाले वीर–विरांगनाओं की	जय
8. भारत माता की	जय
9. गौ माता का	पालन हो
10. आर्य समाज	अमर रहे
11. वेद की ज्याति	जलती रहे
12. ओ३म् का झण्डा	ऊंचा रहे
13. वैदिक ध्वनि	ओ३म्.....

आरती

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे.....ओम जय

जो ध्यावे फल पावे, दु:ख विनशे मन का
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ....ओम जय

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं किसकी...ओम जय

तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ....ओम जय

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ....ओम जय

तुम हो एक आगोचर, सबके प्राणपति
किस विधि मिलूं दयामय, दीजो हमें सुमति ...ओम जय

दीनबन्धु दु:खहर्ता, रक्षक तुम मेरे
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पढ़ा तेरे ....ओम जय

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ....ओम जय

आर्य समाज के विश्वव्यापी दस नियम व उद्देश्य

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालू अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना–पढाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिये।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र!

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया, हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्यसमाज का बहुत बड़ा योगदान है। आर्यसमाज की बराबरी और कोई समाज नहीं कर सकता।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिन्होंने भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्वों के अज्ञान से मुक्ति दिलाकर सत्य और पवित्रता को जागृति किया।

रवीन्द्र नाथ टेगोर

महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं। गुरुदेव द्वारा रचित ग्रंथ **सत्यार्थ प्रकाश** मेरे जीवन में प्रकाश देने वाले सूर्य के समान है।

लाला लाजपत राय

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर

ROHINI PRINTING INDUSTRIES, REHARI COLONY, JAMMU # 0191-2570199